RNI No - RAJHIN/2003/9899 :: Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2015-2017
Published on 30 October 2017 :: Posted at RMS, Sri Ganganagar on Ist or 2nd of Nov. 2017

मासिक पत्रिका

अजायब ✲ बानी

वर्ष : पंद्रहवां | अंक : सातवां | नवम्बर–2017

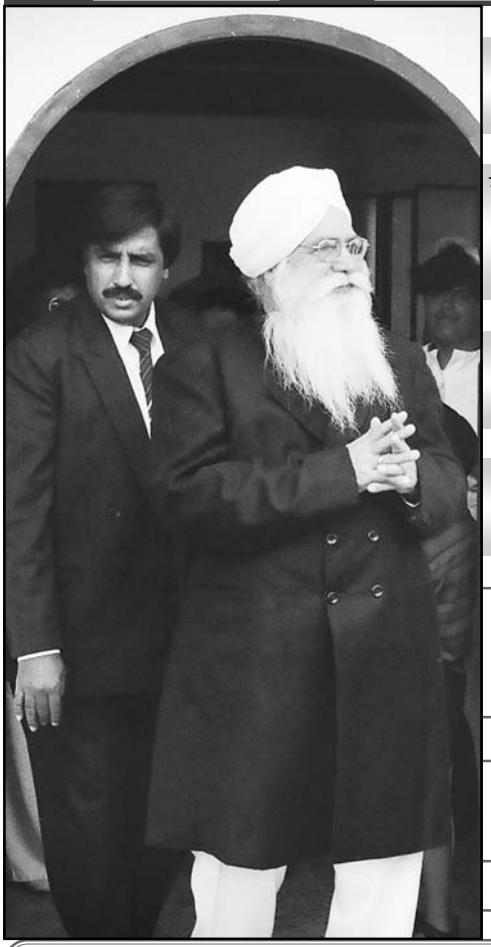

सन्तां दा कर ले संग मना 4
एक शब्द

सतसंग-परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
मर्यादा 5
पल्टू साहब की बानी

एक यादगार दास्तान
आज्ञा का पालन 27

सतसंगों के कार्यक्रम की जानकारी
धन्य अजायब 34

संपादक–प्रेम प्रकाश छाबड़ा
99 50 55 66 71
98 71 50 19 99

उप संपादक–नन्दनी

विशेष सलाहकार–गुरमेल सिंह नौरिया
99 28 92 53 04
96 67 23 33 04

सहयोग–परमजीत सिंह

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने नेशनल प्रिन्टर्स, नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया। मूल्य : ₹5/–

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 188 Website : www.ajaibbani.org

सन्तां दा कर लै संग मना

सन्तां दा कर लै संग मना, चढ़ जाऐ नाम दा रंग मना
होमैं नूं अंदरों, होमैं नूं अंदरों कढणा ऐं
आदत भैड़ी नूं छडणा ऐं,
सतगुरु दी शरणी, सतगुरु दी शरणी पैणा ऐं,
नाम जप के लाहा लैणा ऐं,

1. तैनूं मिलया मानस जामा ओऐ, तूं सांभ लवीं इंसाना ओऐ, (2)
लाहा लैण प्राणी, (2) आया ऐ, माया ने जाल पसाया ऐ,
सतगुरु दी शरणी .....

2. कर बंदगी सोहणा बंदा ऐ, बंदगी दे बाजों गंदा ऐ, (2)
खाली ना जाऐ, (2) दम अड़या, ऐहे चम्म किसे नहीं कम अड़या,
सतगुरु दी शरणी .....

3. सानूं नूरी दर्श दिखा दाता, साडी अक्ख दा पड़दा लाह दाता, (2)
बुरे सहण जुदाईयां, (2) दुःख अड़या, सानूं तेरे दर्श दी भुख अड़या,
सतगुरु दी शरणी .....

4. असीं जन्म–जन्म दे मैल भरे, उजले सतगुरु कृपाल करे, (2)
ओह तारण आया, (2) तारेगा 'अजायब' दे काज सवारेगा
सतगुरु दी शरणी .....

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

मर्यादा

पल्टू साहब की बानी DVD-275 16 पी.एस, राजस्थान

उस कुलमालिक परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार है, जिन्होंने हमारी आत्माओं पर बहुत दया–मेहर की अपने घर का रास्ता बताया। सन्त–महात्मा मालिक के प्यारे संसार में कोई मिशन चलाने के लिए नहीं आते और न ही पहले की बनी किसी समाज को तोड़ते हैं। हर युग में सन्त–महात्मा आए। परमात्मा की तरफ से जिन भूली–भटकी आत्माओं के लिए हुक्म होता है सन्त उन्हें शब्द–नाम के साथ जोड़ते हैं, उन्हें उनके घर पहुँचाते हैं। आपके आगे पल्टू साहब का छोटा सा शब्द रखा जा रहा है, गौर से सुनने वाला है।

पल्टू साहब अयोध्या में पैदा हुए। आम ख्याल है कि अयोध्या श्री रामचन्द्र जी की नगरी है। जिस जगह कोई सन्त–महात्मा मालिक का प्यारा कुछ दिन सतसंग कर जाता है शब्द–नाम का भेद दे जाता है वहाँ पंडित, पुरोहित, मौलवी उनकी विरोधता करते हैं बेशक उनकी आपस में न बनती हो लेकिन सन्तों के जाने के बाद वही लोग उनकी तालीम को कर्मकांड की शक्ल दे देते हैं। वे लोग सन्तों की विरोधता इसलिए करते हैं कि जब आत्मा बाहर से पलटकर अंदर शब्द–नाम के साथ लग जाती है तो उनकी दुकानदारी में फर्क पड़ जाता है।

हमें पता है एक समाज की दूसरे समाज के साथ नहीं बनती लेकिन जब सन्तों की निन्दा करनी हो या सन्तों को कष्ट देना हो तो वे एक हो जाते हैं। ऐसा वे अपने पेट की खातिर करते हैं। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

पंडित भेख पेट के मारे वे सन्तन पर करते तान।
हितकर सन्त उन्हें समझाते वे मानी नहीं माने आन।
उनके चाह मान और धन की परमार्थ से खाली जान।।

इतिहास कहीं भी यह नहीं बताता कि किसी मालिक के प्यारे ने किसी को कष्ट पहुँचाया हो या उन्होंने कभी किसी को कोई बद्दुआ दी हो। गुरु नानकदेव जी, कबीर साहब, सुकरात, हजरत ईसा, मौहम्मद साहब बहुत से महात्मा इस संसार में आए। उस वक्त के भूले लोगों ने महात्माओं को कष्ट दिए। इतिहास में कहीं भी यह नहीं लिखा कि मालिक के प्यारों ने उन लोगों को श्राप या बद्दुआ दी बल्कि महात्माओं ने उन भूले लोगों के हक में परमात्मा से प्रार्थना की, ''हे परमात्मा! तू इन पर रहम कर इन्हें पता नहीं कि ये गलत काम कर रहे हैं या सही काम कर रहे हैं?''

सन्त संसार के सरताज होते हैं। सन्त निस्वार्थ सेवा करते हैं लेकिन हम उनके साथ किस तरह का सलूक करते हैं? पल्टू साहब अयोध्या में हुए, जब रामचन्द्र जी महाराज चले गए तो वह जगह कर्मकांड ने ले ली। जिस जगह दिन–रात कर्मकांड हो वहाँ किसी सन्त के लिए प्रचार करना कितना मुश्किल हो जाता है। पल्टू साहब को परमात्मा ने जो जिम्मेवारी सौंपी थी आपने उस जिम्मेवारी को बहुत दिलेरी और हौसलें के साथ निभाया।

हिन्दु, मुसलमान जिन पर परमात्मा का रहम था वे सब पल्टू साहब के पास चलकर आते थे। जो औरतें पर्दे में रहती थी वे भी शब्द की आवाज सुनकर रोती हुई चली आती थी कि हम अब तक क्यों भूली रहीं। पंडित, मुल्ला, पुरोहित वगैरहा पल्टू साहब के दुश्मन बन गए थे। वह दुश्मनी इतनी ज्यादा बढ़ गई कि पल्टु साहब जिस कुटिया में रह रहे थे लोगों ने इकट्ठे होकर आपकी कुटिया को आग लगा दी, आपको कुटिया के अंदर ही जला दिया। आप सोचकर देखें! महात्मा हमारे ऊपर रहम करने के लिए आते हैं लेकिन हम उनके साथ क्या सुलूक करते हैं? महात्मा हमें कोई बद्दुआ नहीं देते वे फिर भी यह कहते हैं कि हे परमात्मा! इन पर रहम कर।

भाई दया सिंह गुरु गोबिंद सिंह जी के पांच प्यारों में से एक प्यारा था। हमारा इतिहास बताता है कि चंदू सवाई ने गुरु अर्जुनदेव जी को गर्म तवे पर

बिठाया। गुरु हर गोबिंद को बहुत साल ग्वालियर के किले में कैद रखा वह फिर भी शान्त नहीं होता था उसका दिल हमेशा यह तरकीब सोचता था कि इन्हें और भी कष्ट दिलवाया जाए। एक दिन भाई दया सिंह ने गुरु गोबिंद सिंह जी के आगे विनती की, ''चंदू सवाई तो नर्क भोग रहा होगा?'' गुरु गोबिंद सिंह जी ने हँसकर कहा, ''भाई दया सिंह! उसकी संभाल तो गुरु नानकदेव जी ने उसी समय कर ली थी क्योंकि उसने तीन गुरुओं के दर्शन किए थे। वह उन्हें न दिन में भूलता था न रात में भूलता था इसलिए उसका ध्यान पक चुका था।'' कबीर साहब कहते हैं:

साधु स्यों झगड़ा भला, साकत स्यों नहीं मेल।

कम से कम उसका स्वरूप तो आँखों के आगे आएगा। सन्त यह नहीं देखते कि कोई हमारे साथ दुश्मनी करता है उन्होंने तो अपना काम करना है।

महाराज सावन सिंह जी मिसाल दिया करते थे कि एक बिच्छु पानी में बहा जा रहा था। एक महात्मा ने सोचा कि आखिर यह भी आत्मा है इसमें भी जान है। महात्मा ने बिच्छु को पानी से बाहर निकाला तो बिच्छु ने उन्हें डंक मारा तब महात्मा ने बिच्छु को जल्दी से फैंक दिया, बिच्छु फिर पानी में बहने लगा। महात्मा ने कई बार बिच्छु को बाहर निकाला लेकिन बिच्छु बार–बार उन्हें डंक मार देता था। वहाँ कोई आदमी देख रहा था तो उसने कहा महात्मा जी! अगर यह अपनी आदत से नहीं हटता तो आप इसे बहने दें। महात्मा ने कहा, ''प्यारेया! अपनी–अपनी आदत है अगर यह अपनी आदत नहीं छोड़ता तो मैं उपकार करने वाली अपनी आदत क्यों छोडूं?''

जब मेरे गुरुदेव परमात्मा कृपाल ने मुझे आत्माओं को चेताने के लिए कहा तो मैंने आपके आगे अपनी कमजोरी जाहिर की। मैं उस समय रोया कि मैं हर तरह से कमजोर हूँ। दुनिया ने तो हर सन्त की मुखालिफत करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। मैं किस तरह संदेश दे सकूंगा? आपने हँसकर कहा, ''जब बुरा बुराई से नहीं हटता तो भला भलाई से क्यों हटे।'' आपका ही

सहारा था कि मैं एक छोटे से बच्चे को लेकर संसार में चला गया। गुरु नानकदेव जी ने भी यही कहा हैं:

भक्तां ते संसारियां दा जोड़ कदे न आया।

संसारी लोगों पर विषय–विकारों और मैं–मेरी की जहर चढ़ी हुई है अगर कोई इन्हें इनके फायदे की अच्छी बात कहता है तो इन्हें बुरी लगती है ये उसे मारने के लिए आते हैं। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे जिसे बुखार चढ़ा हुआ है उसके मुँह का जायका कड़वा है अगर आप उसे मिश्री दें तो वह बुरा मनाता है कि इसे दूर ले जाओ यह कड़वी है जबकि मिश्री तो मीठी होती है। इसी तरह विषय–विकारों की जहर से हमारे मुँह का जायका कड़वा हो चुका है।

सन्त कहते हैं, ''प्यारेया! इस गुनाह को छोड़ दे इसमें तेरा ही फायदा है। गुनाह कर लेना आसान है लेकिन इसका भुगतान करना बहुत मुश्किल है।'' जब हम भुगतान करते हैं तो रात–दिन परमात्मा के अंदर नुख्स निकालते हैं, गालियां देते हैं कि परमात्मा ने हमारे साथ इंसाफ नहीं किया। परमात्मा किसी के साथ दुश्मनी नहीं करता वह तो रहम का समुंद्र है, सदा ही रहम करता है अगर परमात्मा रहम न करे तो हमारे ऊपर कौन रहम करेगा? लेकिन उसने ऐसा नियम बना दिया है। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

कर्म जो–जो करेगा तूं वही फिर भोगना भरना।

हम जो जो कर्म करते हैं उन्हें करने और भोगने वाले हम ही हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

किसनूं दोष देवे तू प्राणी सब अपना किया करारा हे।
बिन किए लागे नहीं किया न बिरथा जाए।।

जब मालिक के प्यारे भक्ति का संदेश देते हैं तो हमारे लिए उसे सुनना भी मुश्किल हो जाता है। यहाँ तक कि बच्चा सिनेमा देखने जाए, शराब पिए तो हम उसे कभी बुरा–भला नहीं कहते बल्कि खुश होते हैं। अगर बच्चा

भक्ति करने लग जाए तो भाग्यशाली माँ–बाप ही खुश होते हैं, बच्चे की मदद करते हैं बच्चे को सुबह उठाते हैं कि बेटा! हमें खुशी है तू भजन कर।

कबीर साहब ने कहा था कि इस दुनिया ने हजारों सवार पटककर मारे हैं यह दुनिया बेचारी किस गिनती की है? गुरु नानकदेव के माता–पिता परेशान होते थे कि इसे अक्ल नहीं। वे लोगों से कहते कि इन्हें समझाएं ये खेती करें, व्यापार करें। ऐसा सबके साथ ही होता है। किसी ने कबीर साहब की माता से कहा कि तेरा लड़का बहुत अच्छा है लेकिन उनकी माता ने कहा:

सुनों देवरानी सुनों जेठानी अचरज एक भयो।
सात सूत इन मुंडयो खोऐ ये मुंडयो क्यों न मुयो।
जबकी माला लई नपूते तब ते सुख न भयो।।

जिस दिन से यह नाम जपने लगा है हमारे घर में कोई सुख नहीं। इसे हमारे घर के सूत की कोई परवाह नहीं, लोगों को मौत आती है, इसे मौत क्यों नहीं आती। आप ठंडे दिल से सोचकर देखें! दुनिया का उद्धार करने वाले गुरु नानकदेव जी के लिए मांदरी बुला लिया, वैद्य बुला लिया कि इसके अंदर भूत है। गुरु नानकदेव जी खुद कहते हैं:

वैद्य बुलाया वेदगी पकड़ ढ़िढोले बाँह।
भोला वैद्य न जाने कर्क कलेजे माँह।।

वैद्य को बीमारी का क्या पता है? गुरु नानकदेव जी ने वैद्य से कहा:

रोग दारू दोनो जाणें ता नानक वैद्य सदाए।

ऐसी आत्मा के रोग को गुरु जानता है कि इसके अंदर परमात्मा से मिलने की तड़प और विरह है। गुरु नाम की दवाई देता है। जिसके अंदर परमात्मा से मिलने की तड़प है वह रात को जागता है और दिन में परेशान फिरता है कि मेरी कोई वस्तु खो गई हैं मुझे वह वस्तु मिल जाए। इस रोग का वैद्य मिले तभी दवाई मिल सकती है। कबीर साहब कहते हैं:

पापी भक्त न भावी हर पूजा न सुहाय।
मक्खी चंदन पर हरे जह दुर्गंध ते जाय।।

भक्ति तो क्या करनी थी भक्ति करने वाले भी अच्छे नहीं लगते। आप इतिहास पढ़कर देखें माता–पिता कहते हैं कि बच्चा कारोबार नहीं करता वैरागी हो गया है। यार–दोस्त कहते हैं अरे जवान! तू किस तरफ लग गया है? काफी साल पहले की बात है कटहरा का एक चौधरी बहुत हँसमुख था, वह नाम ले गया। उसने मुझसे कहा अगर आप वहाँ सतसंग रखें तभी मेरी जान छूटेगी क्योंकि लोग मुझे बहुत परेशान करते हैं। मैंने उससे कहा कि तू उन्हें यहीं ले आ। मैंने पंजाब जाना था तो मैंने उससे कहा कि वापसी में हम तेरे पास कटहरा आएंगे। हम कटहरा गए। वह धनी आदमी था। उसके यार–दोस्त मेरे पास आकर कहने लगे कि आपने इसे किस तरफ लगा दिया है? सोचकर देख लें! क्या वह बुरी तरफ लगा था? वह भक्ति में ही लगा था।

ऐसा नहीं कि सतयुग, द्वापर, त्रेता में लोगों के ख्याल ज्यादा ठीक थे। चारों युगों में यही मन और यही आत्मा है। सतयुग, त्रेता, द्वापर में थोड़े से इशारे से हमारा मन परमार्थ की ओर लग जाता था। उस समय लोग जप–तप और सुच–संयम पर ज्यादा जोर देते थे। नाम की भक्ति ही परमात्मा से मिलाती है जो उस समय नाम की भक्ति करता था उसे उस समय भी लोगों की मुखालिफत का सामना करना पड़ता था।

कबीर साहब कहते हैं कि मैं जब त्रेता युग में आया उस समय रावण की पत्नी मंदोदरी को नाम मिला हुआ था। मंदोदरी की संगत किसी नाम वाले से थी। रावण शिव का उपासक था उसे शिव से क्या मिला? मंदोदरी चाहती थी कि रावण सतपुरुष के दर्शन करे। मंदोदरी ने रावण से कहा,''कबीर साहब पूर्ण साधू हैं, आप कबीर साहब से नाम लें।''

जब कबीर साहब मंदोदरी के घर गए तो कबीर साहब ने द्वारपाल से कहा कि मैं रावण से मिलना चाहता हूँ। रावण बहुत अहंकारी था उसे अपनी

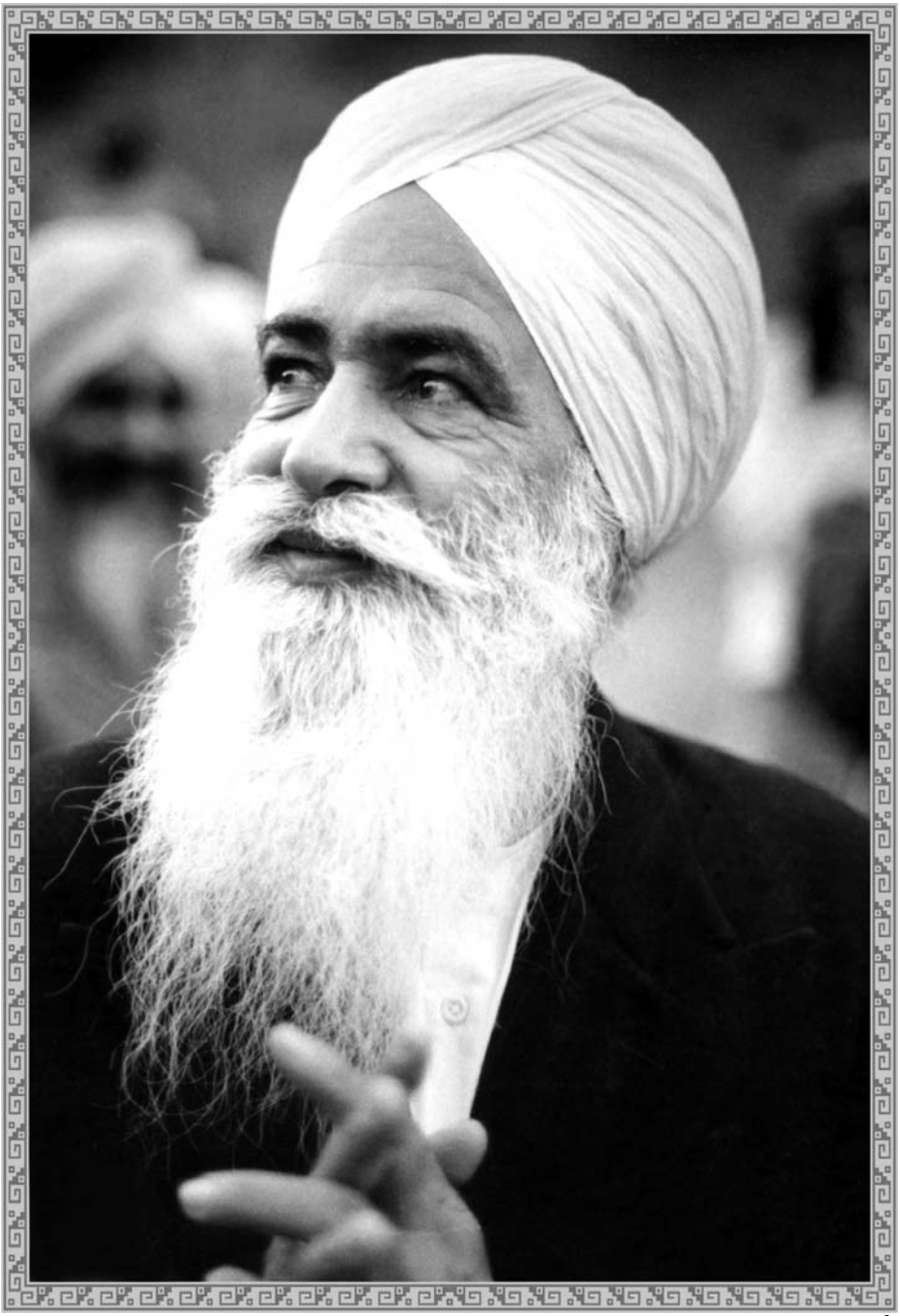

पढ़ाई, राज्य, बाहुबल, सोने–चांदी और फौजों का अहंकार था। जिसके इर्द–गिर्द इतना अहंकार हो वह साधु से किस तरह मिलने आ सकता है? जब कबीर साहब ने द्वारपाल के द्वारा रावण को संदेश भेजा तो रावण ने द्वारपाल से कहा कि तू एक भिक्षुक के कहने पर मुझे बुलाने आ गया है। रावण गुस्से में आया तो आगे कबीर साहब खड़े थे।

रावण ने कबीर साहब पर तलवार के सत्तर वार किए। कबीर साहब एक छोटी सी घास का तिनका लेकर खड़े हो गए। आखिर कबीर साहब ने हँसकर कहा, ''तू अपनी तलवार के जौहर रामचन्द्र को दिखाना।'' कबीर साहब में यही नुख्स था कि आप अपनी भक्ति का संदेश देने के लिए राजा रावण के घर भी गए। पल्टू साहब अपना तजुर्बा बयान करते हैं। हर युग में भाग्यशाली आत्माएं ही इस तरफ आती हैं।

भगत जगत से वैर है चारो जुग प्रमाण।
चारो जुग प्रमाण बैर जो मूस बिलाई ।।

आप मिसाल देते हैं कि बिल्ली को कौन ट्रेनिंग देता है कि जब चूहा दिखाई दे उसे पकड़कर खा लेना। चूहे को कौन सिखाता है कि बिल्ली तेरी दुश्मन है। चूहा बिल्ली की म्यायूं सुन ले या उसे बिल्ली की महक भी आ जाए तो वह अपने बिल से बाहर नहीं निकलता। शुरू से ही कुदरत ने ऐसे उसूल बनाए हैं। जिस तरह बिल्ली और चूहे का वैर है इसी तरह संसारी लोग मालिक के प्यारों की मुखालिफत करते हैं। संसारी लोग किसी को इस तरफ लगने नहीं देते अगर कोई इस तरफ लगता है तो उसकी खूब खबर लेते हैं।

निवर भुयंगम वैर कवल हिमकर अधिकाई।

नेवले और सर्प का वैर है। सर्प नेवले को देखकर ही भाग जाता है अगर सर्प वहाँ खड़ा रहे तो नेवला उसे भागने नहीं देता। उन्हें कौन ट्रेनिंग देता है? परमात्मा ने जो उसूल बनाए हैं उन्हें कोई नहीं मिटा सकता। कबीर

साहब कहते हैं, ''जब से धन पैदा हुआ है तब से चोर धन के पीछे लगे हुए हैं इसी तरह भक्तों की मुखालिफत करने वाले भी इनके पीछे लगे हुए हैं।''

हस्ती केहर बैर बैर है दूध खटाई।

कबीर साहब कहते हैं किस तरह हाथी और शेर का वैर है? हाथी को देखते ही शेर उसके ऊपर भभक मारकर दौड़ता है, हाथी शेर को देखते ही भाग जाता है। दूध के नजदीक खट्टा रख देने से दूध फट जाता है इसी तरह अगर हम यह कहें कि हम एक तरफ मन को दुनिया में रखें और दूसरी तरफ मन को वैराग में रखें ऐसा नहीं हो सकता। जैसे एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकती, एक ही तलवार रहती है।

घर में रह तो भक्ति कर नहीं तो कर वैराग।
वैरागी होय बंधन पड़े ताँके बड़ो अभाग।।

अगर वैराग ले लिया, साधु हो गए तो मन तरह–तरह की बातें करता है लहर उठाता है कि चलो घर–बार छोड़कर भक्ति करते हैं संसार से क्या लेना है। घर–बार छोड़कर बाहर चला जाता है। बाहर जाकर घर याद आता है, बच्चे और पत्नी याद आती है वापिस बस्ती में आ जाता है।

कबीरा ऐह मन मशकरा कहूँ तो माने रोश।

अगर कुछ कहते हैं तो मन गुस्सा करता है। इस मन ने बड़े–बड़े ऋषि–मुनियों से मशकरी की। आप आम पुराणों में शृंगी ऋषि की कहानी पढ़ते हैं कि शृंगी ऋषि बहुत बहादुर था। शृंगी ऋषि ने दुनिया छोड़कर साठ हजार साल बहुत कठिन साधना साधी। हम एक घंटा भी खड़े नहीं हो सकते।

राजा दशरथ के राज्य में अकाल पड़ गया, उस समय आज की तरह नहरें नहीं थी। राजा ने ज्योतिषियों से पूछा तो उन्होंने दशरथ को बताया अगर शृंगी ऋषि यहाँ आकर यज्ञ करे तो बारिश हो सकती है। शृंगी ऋषि

कभी शहर में नहीं आता था। राजा ने कहा जो शृंगी ऋषि को लेकर आएगा मैं उसे मोतियों का थाल भरकर दूंगा।

एक औरत ने कहा कि मैं शृंगी ऋषि को लेकर आ सकती हूँ। वह औरत ऋषियों जैसा वेश बनाकर शृंगी ऋषि के पास चली गई और उसने वहाँ जाकर देखा कि ऋषि क्या खाता है। हमें पता ही है कि जब कोई बंदा हमारी तरह का वेश पहनकर आ जाए तो उससे बात करना आसान हो जाता है। उसने देखा कि ऋषि दिन में पेड़ के ऊपर एक बार जुबान लगाता था। उस औरत ने उस जगह शहद लगा दिया, ऋषि को शहद मीठा लगा मन अंदर ही अंदर सलाह देता है कि स्वाद है, जुबान इन्द्री उस समय अपना काम करती है कि और खा ले। जहाँ ऋषि पेड़ पर दिन में एक बार ही जुबान लगाता था वहाँ वह कई बार जुबान लगाने लगा।

उस औरत ने फिर वहाँ पर हलवा लगाना शुरू कर दिया। हलवा स्वाद लगा जब ऋषि रोज हलवा खाने लगा तो शरीर में ताकत आई। औरत नजदीक ही थी उसके साथ दुनियादारी की बच्चे पैदा हुए। उस औरत ने सलाह दी कि अब यहाँ हमारी गुजर नहीं हो सकती हम शहर में चलकर बच्चे पालते हैं। शृंगी ऋषि ने बच्चे उठा लिए।

मैं जब यह कहानी अमेरिका में सुनाता हूँ क्योंकि अमेरिकन लोग बच्चा इसी तरह उठाते हैं जैसे शृंगी ऋषि ने उठाए थे। एक बच्चा कंधे पर होता है एक बच्चा अगली तरफ लटकाया होता है, एक बच्चा रेहड़ी में होता है। जब यह मिसाल देते हैं तो अमेरिकन प्रेमी हँसते हैं, आसानी से समझ जाते हैं।

इसी तरह जब शृंगी ऋषि शहर की तरफ आया, उसने यज्ञ करवाया। हमें पता है दुनिया इस तरह के वक्त का इंतजार करती है। किसी ने ताना मारा कि हमने सुना था कि शृंगी ऋषि बहुत अच्छा है दुनिया में नहीं आता लेकिन यह तो गृहस्थियों से भी बुरा है इसके कितने बच्चे हैं लेकिन ऋषि का

ख्याल दुनिया में फैला हुआ नहीं था। उसने बच्चे वहीं छोड़े, पत्नी को दूर किया, वापिस जंगल में चला गया लेकिन एक बार तो मन ने मशकरी की।

मन अपने हाथ से कोई मौका नहीं जाने देता। दुनिया और दुनिया के सामान का पता नहीं कि माया ने कैसा रूप धारण करना है। कोई माया के बस आ जाता है तो किसी में बैठकर वह माया देनी शुरू करता है सोचता है कोई नहीं देखता अंदर ही इस्तेमाल कर ले और कोई औरत के बस आ जाता है वह औरत का रूप धारण करके आ जाती है।

अगर इस तरह ठीक नहीं आता तो हुकूमत की कुर्सी पेश कर देता है वहाँ फूला नहीं समाता। हमें पता है कि जब कुर्सी मिलती है तो हम फूले नहीं समाते, बड़ी खुशी होती है लेकिन जब कुर्सी छिनती है तो गमी होती है क्योंकि जिस चीज से खुशी होती है उसी से गमी होती है। बच्चे पैदा होते हैं बड़ी खुशी होती है हम फूले नहीं समाते लेकिन जब वही बच्चे नालायक निकल जाएं या उन्हें परमात्मा वापिस बुला ले तो कितनी गमी पैदा होती है। शादी होती है कितनी खुशी होती है मियां–बीवी फूले नहीं समाते, मियां चला जाए तो बीवी रोती है। पहले जितनी खुशी थी उससे ज्यादा दुख हो जाता है।

माया आती है हम कितने खुश होते हैं सोचते हैं शायद! हमारे पास कोई हुनर है हम बहुत स्याने हैं, माया हमारी स्यानप से ही आई है। जब माया मुकदमों के खर्चों में या बीमारी और डॉक्टरों की फीस में खर्च होती है तो जितनी खुशी थी उससे ज्यादा दुख, ज्यादा परेशानी पैदा हो जाती है। यह दुनिया आरजी है और इसके सुख भी आरजी हैं।

सन्त प्यार से कहते हैं कि सच्ची शान्ति, सच्चा सुख अपने घर जाकर ही हो सकता है। पल्टू साहब का यही संदेश है कि हमें संसार में रहना है संसार को छोड़ना नहीं। सन्तों का यह मिशन नहीं कि हम संसार को छोड़ दें।

मेरा आपको शृंगी ऋषि की कहानी सुनाने का यही मकसद था कि वह संसार छोड़कर गया आखिर उसे संसार में ही आना पड़ा। छोड़कर कहाँ जाएंगे आगे भी संसार ही है। अपना घर छोड़कर किसी डेरे की चौंकीदारी करेंगे, अपनी बीबी को छोड़ेंगे तो अनेकों बीवियों के आगे हाथ फैलाने पड़ेंगे। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

त्यागना त्यागना काम क्रोध लोभ मोह अहंकार त्यागना।
माँगना माँगना हर रस गुरु से माँगना।।

काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार को छोड़ दें। गुरु से नाम और नाम का रस मांगे क्योंकि नाम के बिना मुक्ति नहीं। सन्त नाम के भंडारी बनकर संसार में आते हैं। सन्त नाम रूप होते हैं वे हमें नाम के साथ जोड़ते हैं, नाम का प्रकाश करते हैं।

भैंस घोड़ से बैर चोर पहरू से भाई।
पाप पुण्य से बैर अग्नि और बैर पानी।।

पल्टू साहब कहते हैं, ''जिस तरह चोर और पहरेदार का बैर है। आग और पानी का बैर है। पानी अग्नि को फौरन खुष्क कर देता है इसी तरह पाप और पुण्य का बैर है। जिस हृदय में नाम प्रकट हो जाता है वहाँ से पाप अपना डेरा उठा लेते हैं।''

सन्तन यही विचार जगत की बात न मानी।
पल्टू नाहक हूकता जोगी देखे स्वान।।

पल्टू साहब प्यार से कहते हैं, ''परमात्मा जब भी अपने प्यारे बच्चों को संसार में भेजता है वे जहाँ जाकर जन्म लेते हैं पहले तो उनके घर के लोग उनकी खूब खबर लेते हैं फिर जो भी रिश्तेदार घर में आता है वह बहुत प्यार से मीठी बातों से समझाता है और धमकाता भी है कि अभी से भक्ति करने का तेरा क्या काम है? भक्ति तो बूढ़े करते हैं।''

एक बूढ़ा जो सतसंगी तो नहीं था लेकिन उसके परिवार के लोगों को नाम मिला हुआ था। उसके परिवार के लोगों ने सोचा कि यह बहुत दुखी है चलो इसे बाबा जी के पास ले चलते हैं, यह बाबा जी के दर्शन कर ले। वे लोग उसे यहाँ लेकर आए। उन्होंने मुझसे कहा कि वह ऊपर तो आ नहीं सकता आप ही मेहर करें। मैं नीचे चला गया। मैंने पहले तो उससे कहा, ''सुना बाबा! क्या हाल है?'' वह बूढ़ा कड़ककर बोला, ''बहुत अच्छा है।'' जब मैंने उससे कहा, ''बाबा! परमात्मा की तरफ निगाह रख, राम–राम बोल।'' वह बिगड़कर बोला, ''मैं पहले ही बहुत दुखी हूँ और तुझे राम की पड़ी है।'' आप सोच सकते हैं अगर बूढ़े नाम जपते हों तो जवानों को भक्ति की तरफ लगने की क्या जरूरत है? क्योंकि बूढ़े नाम नहीं जपते।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर ऊँचे भाग्य हों तो बचपन से ही भक्ति की तरफ आ जाएं। पहले ख्याल फैले हुए नहीं होते और जवानी का जोश होता है फिर चाहे बूढ़ा हो जाए।'' जिसका सब कुछ बन चुका है जिसका ख्याल उस तरफ लग चुका है वह सोते–जागते मालिक के साथ जुड़ा है तब उम्र का क्या फर्क है? मालिक के प्यारे जब संसार में आते हैं तो वे दुनियादारों की बातों को नहीं मानते, कष्ट सह लेते हैं।

भजन तेल की धार साधना अधके साधी।

पल्टू साहब कहते हैं कि परमात्मा ने सन्तों के जिम्में जो काम लगाया होता है कि आपने यह करना है वे दुनिया की परवाह नहीं करते। अपना भजन–अभ्यास करते हैं, कठिन साधना साधते हैं।

हंस चुगे न घोघी सिंह चरे न घास।।

परमात्मा ने हर पशु–पक्षी, इंसान–हैवान की **मर्यादा** बनाई है और हम उस मर्यादा में बंधे हुए हैं। चाहे किसी भी योनि में हैं उस मर्यादा को पूरा करते हैं लेकिन इंसान अपनी **मर्यादा** पूरी नहीं करता। परमात्मा ने चौरासी लाख

योनियां भुगतने के बाद इंसान की योनि में एक छोटा सा मौका दिया है। जो काम हम पशु–पक्षियों की योनि में नहीं कर सकते वह काम इंसान की योनि में कर सकते हैं वह काम परमात्मा की भक्ति परमात्मा के साथ मिलाप है अगर इस योनि में परमात्मा के साथ मिलाप नहीं किया तो पता नहीं फिर मौका मिले या न मिले! किसी ऐसी जगह जन्म हो जाए जहाँ जाकर आप भूले–भटके भी परमात्मा की तरफ न जा सकें।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''दुनिया में ऐसी बहुत सी कौमें और ऐसे बहुत से इलाके हैं जिन्हें पता ही नहीं कि परमात्मा क्या चीज है?''

मैं कनाडा गया, वहाँ मनसा सिंह के घर हमारा सतसंग था। कुछ हिन्दुस्तानी प्रेमी मिलने के लिए आए उनमें एक औरत थी। उस औरत ने सवालों की झड़ी लगा दी। उसका सवाल बार–बार मीट खाने पर ही था। वह बार–बार यही कह रही थी कि बहुत से ऐसे इलाके हैं जहाँ मछली के बगैर कुछ मिलता ही नहीं क्या वे लोग पापी हुए?

मैंने उस औरत से कहा कि हम यहाँ बैठे हैं यहाँ केले, संतरे, सेब और हर तरह का अनाज मिलता है तू यहाँ की बात कर। क्या तू वहाँ पैदा हुई है? अगर तू वहाँ पैदा हो तो तुझे कोई दोष नहीं। शेर माँस खाता है उसे क्या दोष है उसके दाँत उस तरह के बनाए हैं। बिल्ली मीट खाती है उसे क्या दोष है उसके दाँत उस तरह के बनाए हैं। परमात्मा ने इंसान के दाँत माँस खाने वाले नहीं बनाए। माँस खाने वालों के दाँत नुकीले होते हैं इंसान के दाँत चपटे हैं। कुदरत को चैलेंज नहीं किया जा सकता। हम लोग ऐसी बाते घड़ लेते हैं अपनी **मर्यादा** से दूर चले जाते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

कबीरा मानस जन्म दुर्लभ है मिले न बारंबार।
ज्यों वन फल पक्के भोंये गिरे बहुर न लग्गे डार।।

जो फल पककर एक बार जमीन पर गिर गया वह दोबारा पेड़ पर नहीं लग सकता। एक बार इंसान का जामा हाथ से निकल गया फिर हाथ नहीं

आएगा। जिस तरह पपीहे की मर्यादा है हाँलाकि वह पक्षी है लेकिन पपीहा स्वाति बूँद का ही पानी पीता है। प्यासा मर जाएगा दम तोड़ देगा लेकिन नदी–नालों का पानी नहीं पिएगा। पपीहा कहता है हमारे कुल की यही रीत है, मेरी कुल को लाज लग जाएगी। कबीर साहब कहते हैं:

पपीहे का पन देखकर धीरज रही न रंच।
मरते दम जल में पड़ा तोहू न बोड़ी चुंज।।

मैं गंगा के किनारे घूम रहा था पपीहा पिरो–पिरो करके गंगा में गिर गया उसने दम तोड़ दिया लेकिन अपनी चोंच नहीं खोली वह भी **मर्यादा** रखता है। कमल की भी **मर्यादा** है, कमल सूरज को देखता है खिल उठता है।

हम आमतौर पर सूरजमुखी देखते हैं जैसे–जैसे सूरज घूमता है सूरजमुखी का फूल भी उस तरफ घूम जाता है। पशु–पक्षियों की भी मर्यादा है लेकिन इंसान की जो मर्यादा है कि परमात्मा की भक्ति करनी है परमात्मा से मिलना है यह अनाज खाना है यह नहीं खाना हम अपनी **मर्यादा** को छोड़ देते हैं इसलिए पल्टू साहब इस शब्द में बताते हैं गौर से सुनने वाला है:

हंस चुगैं ना घोघी सिंह चरैं न घास।।
सिंह चरै ना घास मारि कुंजर को खाते।
जो मुरदा ह्वै जाय ताहि के निकट न जाते।।
वे न खाहिं असुद्ध रीत कुल की चलि आई।

आप प्यार से कहते हैं कि परमात्मा ने हर एक की **मर्यादा** बनाई है। हंस हमेशा मोती चुगता है, वह घोघे–सीपियां नहीं खाता अगर खाता है तो उसकी कुल को दाग लगता है; वह अपने कुल की मर्यादा पालता है। शेर घास नहीं खाता, मुर्दा नहीं खाता। अपना शिकार करके ताजा माँस खाता है अगर वह मुर्दा खाए तो उसकी कुल को दाग लगता है।

परमात्मा ने सन्तों की भी **मर्यादा** बाँध दी है अगर वे उस मर्यादा को तोड़ते हैं तो उनके जिम्मे भी दोष आता है। सन्त संसार में आकर हम जीवों को मर्यादा ही समझाते हैं।

कोई गुरु–चेला चले जा रहे थे। चेले ने कहा, ''महाराज जी! कोई ऐसा उपदेश करें जिससे मुझे शान्ति आए, दिल को ठंडक पड़े।'' गुरु जी ने कहा, ''देख बेटा! कुछ बनना नहीं है।'' समझने में यह छोटी सी बात है। वे दोनों आगे चलते गए वहाँ एक राजा का बाग था महल थे अच्छे पलंग लगे हुए थे। पलंग पर अच्छे बिस्तर बिछे हुए थे। चेले ने गुरु से कहा कि यहाँ कुछ देर आराम कर लेते हैं। गुरु ने चेले से कहा, ''ये बिस्तर किसी के लिए बिछाए हैं।'' चेले ने कहा, ''नहीं जी, यहाँ से कौन हटाता है?''

गुरु एक तरफ होकर अपने अभ्यास में बैठ गए। चेला पलंग पर सो गया, कभी नरम गद्दे नहीं देखे थे लेटते ही नींद आ गई। जब राजा के अहलकार आए उन्होंने उसे बिस्तर पर सोते हुए देखा तो अहलकारों ने उसे कान से पकड़कर उठा दिया और पूछा तू कौन है, जो महलों में आकर सो रहा है? चेले ने कहा, ''मैं साधु हूँ।'' अहलकारों ने उसे खूब मारा कि साधु बनकर राजा के महलों में आकर नरम बिस्तर पर सोता है।

चेले ने गुरु के पास आकर कहा, ''मुझे तो उन्होंने खूब मारा है।'' गुरु ने कहा, ''बच्चू! तू कुछ बना होगा, तूने कुछ कहा होगा?'' चेले ने कहा, ''मैंने कुछ नहीं कहा उन्होंने पूछा तू कौन है? मैंने कहा कि मैं साधु हूँ।'' गुरु ने कहा, ''तू साधु बना तभी मार पड़ी। वे आए तो मेरे पास भी थे पहले तो मैं उन बिस्तरों पर सोया नहीं। जब उन्होंने मुझसे पूछा कि तू कौन है? मैंने कहा कि मैं एक राही हूँ थक गया था थोड़ी देर जमीन पर बैठकर आराम कर रहा हूँ। उन्होंने मुझे गरीब समझकर छोड़ दिया।''

सन्त आकर हमें संसार की **मर्यादा** समझाते हैं और यह भी बताते हैं कि प्यारेयो! कुछ बनो मत अगर बनोगे तो उस चेले की तरह ही होगी। हम

साधु नहीं होते लेकिन साधु बनने का अहंकार करते हैं। गुरु साहब की बानी एक अगुवाही है हमें उसे समझना चाहिए अगर हम अगुवाही को नहीं समझेंगे उसके मुताबिक नहीं चलेंगे तो दोष आएगा। दूसरों से कहना कि तू भजन कर खुद भजन नहीं करना तो दोष आएगा। आपके अंदर एक ऐसी ताकत है जब आप चुप करके भी बैठते हैं तो उसे पता है कि यह चुप क्यों बैठा है? जब आप बोलते हैं वह आपके अंदर को पढ़ता है कि यह क्या कहता है क्या करता है? कबीर साहब कहते हैं:

राम झरोखे बैठके सबका मुजरा ले।
जैसी जांकी भावना, वैसा ही फल दे।।

जो साधु बनेगा वह कब कहेगा कि मैं साधु हूँ, वह तो यही कहेगा कि मैं तो आपका सेवादार हूँ। काफी समय पहले की बात है एक अंग्रेज ने पत्र लिखा कि मैंने बहुत खोज की है। मैं चीन, जापान और कई मुल्कों में गया हूँ और महात्मा बुद्ध के सेवकों से भी मिला हूँ। मैं आपको पत्र इसलिए लिख रहा हूँ क्या आप मेरे होने वाले गुरु हैं? मैंने उसे प्यार से कहा कि मैं गुरु नहीं, मैं तेरी आत्मा की सेवा करने के लिए तैयार हूँ अगर तूने मेरी सेवा से फायदा उठाना है तो तेरी मौज है। हर एक महात्मा की बानी में आता है:

नानक दास यही सुख मांगे मोको कर सन्तन की धूरे।

साधु साधना करता है फैले हुए ख्याल को नौं द्वारों में से निकालकर आँखों के पीछे लाता है। स्थूल, सूक्ष्म और कारण के तीनों पर्दें उतारकर पारब्रह्म में पहुँचता है। गुरु रामदास जी कहते हैं:

साधु साध साध जन नीके जिन अंतर नाम धरीजे।
परसन परस भये साधु जन जन हर भगवान दखीजे।।

ऐसे साधु के चरणों में बैठना भगवान के चरणों में बैठना है। ऐसे साधु के साथ हाथ मिलाना भगवान के साथ हाथ मिलाना है। साधु का मिलना कितना मुश्किल है? फरीद साहब कहते हैं:

दर दरवाजे जायके क्यों डिट्ठा घड़ियाल।
ऐह निर्दोषा मारिए हम दोषा दा क्या हाल।।

फरीद साहब ने घड़ियाल बजता हुआ देखा। पहरे पर लोग घड़ियाल को हथौड़ी से मारते हैं। यह देखकर आप कहते हैं कि इसने कोई दोष नहीं किया फिर इसे क्यों पीटा जाता है? हम तो दिन–रात दोष करते हैं।

काले मेरे कपड़े काला मेरा वेश।
गुनही भरया मैं फिरा लोक कहन दरवेश।।

मैं तो गुनाहों से भरा हुआ हूँ अगर गुनाह साफ किए हैं तो गुरु ने किए हैं। गुरु का धन्यवाद है कह सकते हैं कि गुरु सच्चा साधु है।

पल्टू साहब प्यार से कहते हैं कि सन्तों की भी **मर्यादा** है। सन्त नाम के मोती चुगते हैं माया का चोगा नहीं चुगते। सन्त ऐसे शेर होते हैं जो अपनी हक–हलाल की कमाई से गुजारा करते हैं। वह लोगों का कमाया हुआ धन मुर्दा नहीं खाते, यह मुर्दार खाने के बराबर है। परमात्मा ने सन्तों की मर्यादा बनाई है जो सन्त कमाई करता है वह उस मर्यादा में पूरा उतरता है।

खाये बिनु मरि जाहिं दाग ना सकहिं लगाई।।

शेर भूखा मर जाएगा लेकिन वह किसी के मारे हुए पर निर्भर नहीं होता। वह मुर्दा नहीं खाता कुल को दाग नहीं लगाता।

सन्त सभन सिरताज धरन धारी सो धारी।

परमात्मा ने सन्तों को सारी सृष्टि का सरताज बनाकर भेजा होता है। सन्त परमात्मा के भेजे हुए धरती पर आते हैं। उन्होंने सर्गुण रूप धारण किया होता है, अंदर निर्गुण परमात्मा में समाए होते हैं।

नई बात जो करैं मिलत है उनको गारी।।

भीख न माँगै सन्त जन कहि गये पल्टूदास।
हंस चुगैं ना घोंघी सिंह चरैं ना घास।।

पल्टू साहब कहते हैं जिस तरह हंस घोघे नहीं चुगता मोती चुगता है। शेर अपना मारकर खाता है कुल को दाग नहीं लगाता। इसी तरह सन्त–महात्मा भी हक हलाल की कमाई पर अपना गुजारा करते हैं अगर वे **मर्यादा** को तोड़ते हैं तो उनके ऊपर भी दोष आता है। यह मर्यादा किसी सन्त ने नहीं बनाई, परमात्मा ने धुरधाम से ही मर्यादा बनाई है।

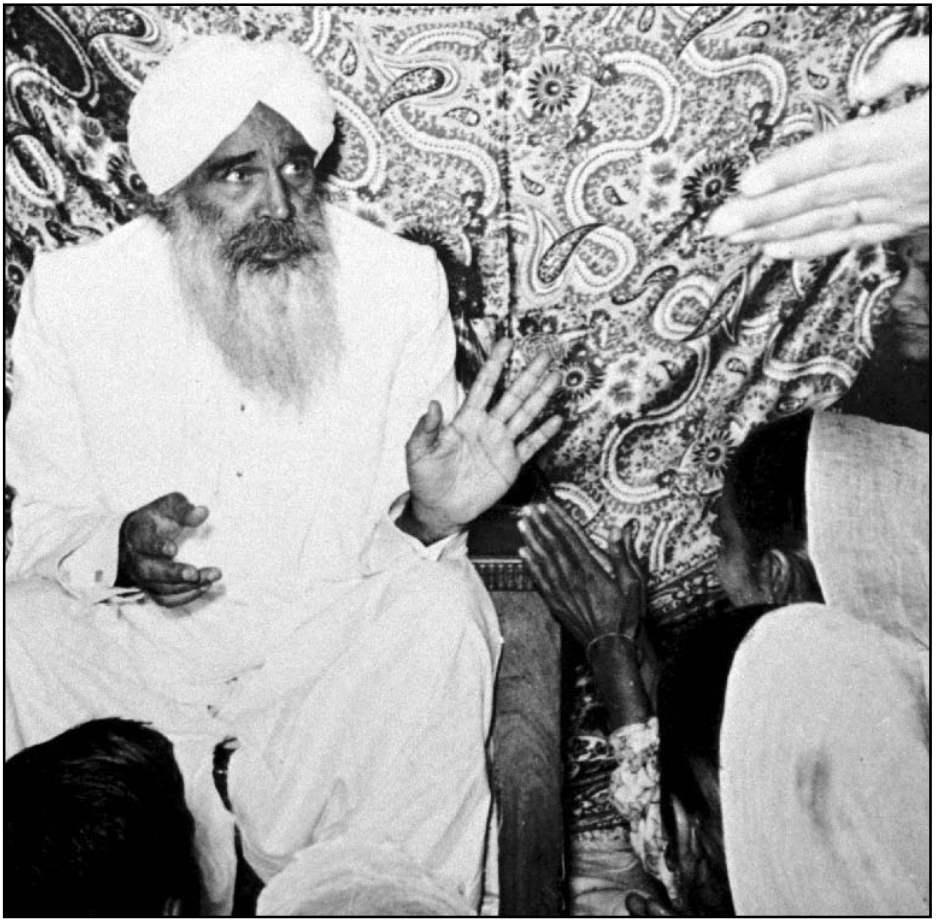

सब कुछ परमात्मा के हाथ में है। जो महात्मा कमाई करता है उसका स्वभाव नेहचल बन जाता है। वह किसी के आगे हाथ नहीं फैलाता कि मैंने बाल–बच्चे पालने हैं यह काम करना है, आप मुझे दें।

कबीर साहब कहते हैं सन्त संगत के लिए किसी का भला करवा देंगे कि तू अच्छी तरफ लगा दे, नेक सलाह दे देंगे। इसलिए सन्तों ने तन, मन और धन की सेवा रखी है। हम साध संगत की सेवा करते हैं दरियां बिछाते हैं, खाना बनाते हैं, खाना परोसते हैं, खेती करते हैं यह तन की सेवा है। मन की सेवा सन्तों का दिया हुआ सिमरन करते हैं बुरे ख्याल नहीं सोचते अगर हम सतसंगी होकर बुरे ख्याल करते हैं तो हम तन की सेवा नहीं मन की सेवा कर रहे हैं। हमने धन में से मोह निकालना है किसी का फायदा करना है। परमात्मा ने आज हमें जो धन दिया है वह पहले किसी ओर के पास था अगर आज हम फायदा उठा लेंगे तो इसी में हमारा फायदा है।

बाबा सावन सिंह जी बताया करते थे कि आप पेशावर में बाबा कान्ह के पास जाते थे, महाराज कृपाल भी बाबा कान्ह के पास जाते रहे हैं। आप दो–तीन रूपये बाबा कान्ह के चरणों में रख देते। उस समय करंसी का बहुत मूल्य होता था। बाबा कान्ह उन रूपयों को खुल्ला करवाकर छोटे–छोटे बच्चों में बाँट देते। महाराज जी ने बताया कि लड़ाई में तनख्वाह ज्यादा हो जाती है जमा होती रहती है जब घर आते हैं तो इकट्ठी मिलती है। मैं खुद लड़ाई में रहा हूँ मुझे वहाँ की **मर्यादा** का पता है। जब मैं लड़ाई से आया तो ज्यादा पैसे मिले थे तब बाबा कान्ह ने कहा कि मैं चिट्टे–चिट्टे गोल–गोल ज्यादा लूंगा।

महाराज जी ने हँसकर कहा, ''बाबा! तू लालची हो गया है।'' मैंने पहले ही वहाँ ज्यादा पैसे रख दिए थे। बाबा कान्ह ने कहा, ''तू इन पैसों को उठा ले तेरा दिल दुखेगा।'' मैंने कहा मेरा दिल नहीं दुखता मैंने तो खुश होकर आपके आगे रखे हैं। बाबा कान्ह ने कहा, ''मैं चाहता हूँ कि तेरा धन पवित्र हो जाए, मैंने तेरा धन क्या करना है।''

बाबा कान्ह ने पैसे खुल्ले करवाए मेरे खड़े–खड़े ही काफी सारे बच्चे आए वे बाबा कान्ह की जेब में से पैसे निकालकर ले गए, बोरी के नीचे कुछ पैसे रखे थे कुछ बच्चों ने वहाँ से भी पैसे निकाल लिए। बच्चों को पता था कि कोई पैसे देकर जाता है तो बाबा जी वे पैसे हमें ही देते हैं। सन्तों के पास ऐसे जरूरतमंद प्रेमी भी आ जाते हैं इसलिए सन्त हमारा उपकार करवा देते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

मर जाऊं मांगू नहीं अपने तन के काज।
परमार्थ के कारणे मोहे न आवे लाज।।

एक दफा मैं बाबा बिशनदास जी के चरणों में गया। उनके पास एक औरत आई। बाबा बिशनदास जी ने उस औरत से पूछा, ''तूने लड़की की शादी कर दी?'' उस औरत ने कहा कि हमारे पास पैसे नहीं हैं हम बहुत तंग हैं। बाबा बिशनदास ने मुझसे कहा कि इसकी लड़की की शादी कर दे। उन दिनों करंसी का बहुत कम फैलाव था, उस लड़की की शादी दो सौ रूपयों में हुई। लड़की को भैंस लेकर दी काफी कपड़े और गहने भी दिए। मेरा ख्याल है कि आजकल तो उस तरह की शादी पांच–छह लाख में भी नहीं होती जो उस समय दो सौ रूपये में हुई थी।

पल्टू साहब ने इस शब्द में हमें हर तरीके से समझा दिया हमें भी चाहिए कि हम भजन–सिमरन करें अपने दस नाखूनों की नेक कमाई करके साध–संगत की सेवा करें अपने जीवन को सफल बनाएं।

पशु पक्षी भी **मर्यादा** निभाते हैं। इंसान के जामें में आकर हमें वह मर्यादा निभानी चाहिए। वह मर्यादा परमात्मा की भक्ति है जिस परमात्मा ने हमें पैदा किया है उसकी याद दिल में रखनी है, परमात्मा के लिए घंटे दो घंटे का समय निकालें।

24 अगस्त 1994

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से एक यादगार दास्तान

आज्ञा का पालन

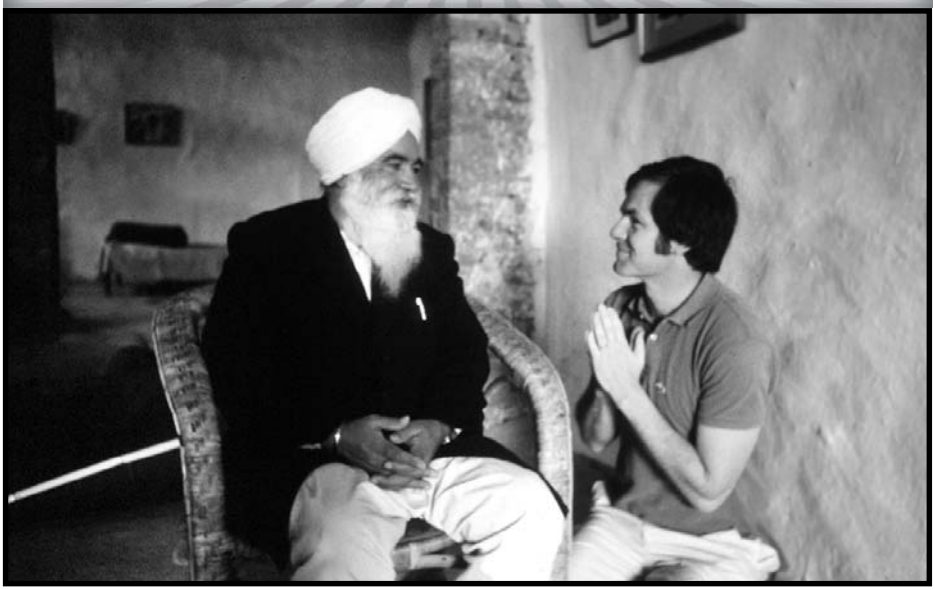

दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान हिटलर अपनी फौज के साथ आगे बढ़ रहा था उसकी फौज को रोका नहीं जा सकता था। उस समय भारत के लोग फौज में भर्ती होने के लिए तैयार नहीं थे। लोग जानते थे कि उनकी मौत निश्चित है, वे घर वापिस नहीं आएंगे। लोगों को जबरदस्ती फौज में भर्ती किया जा रहा था। लोग जंग में जाने से इतना डरे हुए थे कि उन्हें जेल में बीस साल रहना आसान लग रहा था; वे सोचते थे कि फौज में भर्ती होना आत्महत्या के बराबर है।

मुझे एक महात्मा ने बताया था कि अगर कोई फौज में मर जाता है तो वह स्वर्ग में जाता है। मुझे स्वर्ग देखने की इच्छा थी। जब फौज में भर्ती करने वाले हमारे गाँव में आए उस समय मैं अपने गाँव में से

अकेला ही इन्सान था जो फौज में भर्ती हुआ। उस समय मेरी आयु अठारह साल भी नहीं थी।

मुझे कोई आदेश नहीं दिया गया था और अभी मेरी बारी भी नहीं थी लेकिन मैंने खुश होकर जंग में जाने के लिए अपना नाम लिखवाया। मेरे अफसरों ने मेरी हिम्मत देखकर कहा, ''यह अभी छोटा है फिर भी जंग में जाकर अपना बलिदान देने के लिए तैयार है।'' उस समय मेरे अंदर बहुत उत्साह था, मुझे मौत का डर नहीं था। मैं किसी भी मुसीबत का सामना करने के लिए तैयार था।

भर्ती के एक महीना बाद जब हमें जंग में भेजा जाना था उस समय हम सबका डाक्टरी परीक्षण किया गया। डाक्टर ने परीक्षण करने के बाद बताया कि किन जवानों को दूध की जरूरत है। हमारे कमांडर ने बहुत दुःखी होकर कहा, ''ये सभी बलि के बकरे हैं मैं चाहता हूँ कि सबके लिए दूध लगवा दिया जाए।''

मैं बहुत बहादुर था मुझे मौत की कोई चिन्ता नहीं थी। मुझे मालूम था कि मौत उसी तरह आती है जिस तरह किस्मत में लिखी होती है। मुझे फौज में भर्ती होने का कोई पछतावा नहीं था।

मैं जब दोबारा बाबा बिशनदास जी के पास गया तो मैंने उन्हें फौज में भर्ती होने का कारण बताया। आपने कहा, ''स्वर्गों में भी मौत, पैदाईश, प्यार, दुश्मनी सब कुछ है। जिस तरह धरती पर भौतिक शरीर और भौतिक रस-भोग हैं, उसी तरह स्वर्ग में भी सूक्ष्म शरीर और सूक्ष्म रस-भोग हैं। जहाँ रस-भोग और शरीर हैं वहाँ मन शरीर से जुड़ा हुआ है। जहाँ मन है वहाँ शान्ति और संतुष्टि नहीं।''

आपने मुझे स्वर्गों के राजा इन्द्र देवता की कहानी सुनाई। जब इन्द्र देवता के काम की संतुष्टि स्वर्गों की किसी दैवीय नारी से नहीं हुई तब

उसकी नजर एक ऋषि की पत्नी पर पड़ी। इन्द्र ने काम इच्छा को पूरा करने के लिए संसार में मनुष्य का रूप धारण करके ऋषि की पत्नी का सत भंग करके अपनी शान्ति खो दी।

ऋषि की पत्नी भगवान की भक्ति करती थी। ऋषि ने राजा इन्द्र को श्राप दिया जिसका परिणाम राजा इन्द्र को अपना देश छोड़कर जाना पड़ा। जब स्वर्गों के राजा की यह हालत है तो स्वर्ग में रहने वाले बाकी लोगों की क्या हालत होगी?

बाबा बिशनदास जी ने मुझे बताया कि लोग स्वर्ग में जाने के लिए जप-तप और अच्छे कर्म करते हैं। वहाँ सूक्ष्म रूप में रहने वाले भी शारीरिक भोग-विलास करते हैं। जहाँ भोग विलास हैं वहाँ शान्ति और संतुष्टि नहीं फिर स्वर्गों में जाने का क्या फायदा?

मैंने फौज में **आज्ञा का पालन** और अनुशासन में रहना सीखा। यह सब इन्सान की अपनी समझ पर निर्भर है। फौज में यह कानून है कि आपको जो काम दिया जाए आप पहले वह काम करें अगर आपके दिमाग में कोई दुविधा है तो बाद में पूछें।

अगर आप बहाने बनाएंगे तो आपके अफसर आपसे नाराज हो जाएंगे। फौज में जो लोग **आज्ञा का पालन** नहीं करते थे उन्हें सजा मिलती या उन्हें घर वापिस भेज दिया जाता था। मैंने अपने अफसरों की **आज्ञा का पालन** करके ही उनकी खुशी हासिल की।

सतसंग में भी यही बताया जाता है कि आप **आज्ञा का पालन** करें और अनुशासन में रहें। 'नामदान' के समय बहुत सारी बातें बताई जाती हैं कि आदेशों की सीमारेखा के अंदर रहना ही अनुशासन है। सन्तमत में हमें एक सिपाही की तरह बहादुर बनना पड़ता है। जिस तरह हम बहुत कष्ट में रहते हुए भी सांसारिक और सरकारी काम करते हैं;

उसी तरह हमें हमेशा सतगुरु से डरना चाहिए और सतगुरु की आज्ञा का पालन करना चाहिए।

आज्ञा का पालन और अनुशासन की आदत ने जिंदगी में मेरी बहुत मदद की। इसी आदत की वजह से जब मैं अपने गुरु से मिला उन्होंने मुझे जो करने के लिए कहा, मैं वह कर सका।

ट्रेनिंग के दौरान हमें बंदूक चलाना सिखाते हुए समझाया गया कि हमें गोली निशाने पर चलानी है। बंदूक चलाते हुए हमने सबसे पहले शरीर, बंदूक और निशाना एक लाईन में रखने हैं। बिना हिले-डुले साँस रोककर पूरे ध्यान से बंदूक के अगले और पिछले दोनों भागों के बीच से देखना है। दोनों आखों की नजर को एक ही लाइन में सीधा रखकर धीरे से घोड़ा दबाना है। जो लोग सिखाए गए तरीके के मुताबिक गोली चलाते थे वे कामयाब होते थे। जो लोग अपना ध्यान, शरीर, बंदूक और निशाना एक लाइन में नहीं रखते थे या हिल जाते वे कामयाब नहीं होते थे।

भजन-अभ्यास में भी यही बात लागू होती है। जब हम भजन में बैठते हैं हमारा निशाना आँखों के बीच का स्थान है। हमने भजन में अपने शरीर को उसी तरह स्थिर रखना होता है जैसे फौज में बंदूक चलाते हुए अपने शरीर, दिमाग और मन को स्थिर रखते हैं। अगर हम अपने ध्यान को ठीक तरीके से अपनी आँखों के बीच टिका लें! कुछ ही बैठकों में तरक्की होने लगती है।

हमें एक इंच की जगह में पाँच गोलियाँ चलानी होती थी। बार-बार निशाना बदलने वाले कामयाब नहीं होते। मैंने हर समय एक ही निशाना रखा। इसी आदत ने सन्तमत में मेरी बहुत मदद की। गुरु हमसे कहता है, ''प्यारेयो! अगर आप कामयाब होना चाहते हैं तो अपने ध्यान को एक ही जगह एकाग्र करें।''

फौज में अलग-अलग किस्म के लोग होते हैं। उनमें से कुछ एक तो शराब पीते, वैश्याओं के पास जाते और गन्दी भाषा का इस्तेमाल करते। मुझे याद है कि शुरू-शुरू में वे लोग शाम को शराब पीकर नाचते, गन्दे शब्दों का इस्तेमाल करते और मेरे पलंग के पास भी आ जाते। वे मुझे भी अपने साथ शामिल होने के लिए कहते लेकिन मैं उनसे कभी प्रभाावित नहीं हुआ। मैं सिर पर चादर ओढ़कर सो जाता। वे कभी-कभी मेरे ऊपर से चादर खींच लेते लेकिन मैं उन्हें अपने ऊपर से चादर नहीं हटाने देता था।

हम सब एक बड़े बैरक में रहते थे। जब उन्हें अहसास हुआ कि मैं उन जैसा नहीं हूँ, भक्ति कर रहा हूँ। वे इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने मुझे तंग करना छोड़ दिया। इसके बाद उन्होंने बैरक में शराब पीने की हिम्मत नहीं की। वे बैरक से बाहर जाकर शराब पीने लगे।

अगर हम बैठकर सिमरन कर रहे हैं, कुछ लोग हमारे नज़दीक बैठकर बातें कर रहे हैं और हम उनकी बातों पर ध्यान देते हैं; अपने दिल में उनके लिए गलत सोचते हैं तो हम भक्ति नहीं कर रहे होते। अगर हम सिमरन करते हुए उनकी बातों पर तवज्जो नहीं देते तो कुछ देर बाद उन्हें एहसास हो जाएगा कि वे गलत कर रहे हैं, क्योंकि परमात्मा उनके अंदर भी विराजमान है।

अगर हमारा सिमरन पक्का है, हम अपने आपमें सच्चे हैं तो कोई फर्क नहीं पड़ता चाहे कितने ही लोग हमारे नज़दीक बैठकर बातें कर रहे हों; परमात्मा उन्हें चुप करवाएगा और वे अपने आप ही बाहर चले जाएंगे। परमात्मा कोई न कोई तरीका निकालकर हमारे लिए परिस्थिति आसान बनाएगा ताकि हम ज्यादा से ज्यादा सिमरन कर सकें।

अगर मैं उन लोगों से यह कहता कि मैं अभ्यास कर रहा हूँ, आप लोग चुप रहें तो वे और शोर मचाकर मुझे तंग करते। मैंने उनकी तरफ ध्यान ही नहीं दिया अपना काम करता रहा।

मेरी लोगों से मेलजोल की आदत नहीं थी। मैंने कभी ताश और शतरंज नहीं खेली। मैं भीड़-भाड़ वाली जगह बाजारों और शहरों में भी नहीं जाता था। अगर मुझे कपड़ा, साबुन या किसी और सामान की जरूरत होती तो मैं अपने दोस्तों से ये सब चीज़े मँगवा लेता। लोग मेरा मजाक उड़ाते और मुझसे कहते, ''अगर तुम्हे इस संसार के बारे में कुछ मालूम नहीं तो तुम इस संसार में क्यों आए हो?''

मैं अपनी जिंदगी में कभी फिल्म देखने नहीं गया। फौज में हमें हर रविवार को मुफ्त में फिल्म दिखाई जाती थी। सब लोग फिल्मों की तारीफ करते और मुझसे कहते, ''यह बहुत अच्छा मनोरंजन है। पैसे भी नहीं देने पड़ते फिर तुम फिल्म क्यों नहीं देखते?'' मेरे अफसर भी मुझसे पूछते कि तुम फिल्म देखने क्यों नहीं जाते? वे लोग जब मुझे फिल्म देखने के लिए प्रेरित करते तो मैं उन्हें अंदर की फिल्म देखने के लिए प्रेरित करता। मैं उन्हें बताया करता, ''अगर जहर मुफ्त में भी मिले तो वह बुरा ही असर करती है।''

मैं यह नहीं कहता कि संसार बुरा है लेकिन मैं इसे अपनाना नहीं चाहता था। आधुनिक वस्तुएं इन्सान को बाहरमुखी बनाती हैं। मैं अंतरमुखी बनने की कोशिश कर रहा था। फिल्में देखने से संसार की लहरें दिमाग में आती हैं और मन संसार में फैल जाता है अगर हम फिल्में देखें! तो हमें अभ्यास में वही सब दिखाई देगा।

अगर आप सच्ची सुंदरता और शान्ति चाहते हैं तो एक जगह बैठकर अपने अंदर देखने की कोशिश करें, अंदर बहुत सुंदर चीज़ें हैं।

बाहर के मनोरंजन से हम दो-तीन घंटों में थक जाते हैं लेकिन अंदर का मनोरंजन ऐसा है जिसे देखकर कभी थकावट नहीं होती। मैं अंदर जाकर उस जीवंत फिल्म को देखने की कोशिश कर रहा था जो मेरे अंदर चल रही थी, इसलिए मैं बाहरी फिल्में नहीं देखना चाहता था।

लोग फिल्में देखने जाते हैं जबकि स्क्रीन पर कुछ भी सच नहीं होता। बुरी फिल्में हमारे विचारों को फैला देती हैं। हम अंदरूनी चीज़ों की तरफ ध्यान नहीं देते, झूठी बातों पर अपना कीमती समय बर्बाद कर देते हैं। मैं अपने कमांडिंग अफसर से प्रार्थना करता कि फिल्म देखने की बजाय मुझे कोई काम दे दिया जाए। मेरे अफसर मुझसे कहते, ''अगर तुम फिल्म नहीं देखना चाहते तो जाकर आराम करो।'' मैं बैठकर 'हे राम' 'हे गोविंद' का जाप करता।

मुझे 'नामदान' नहीं मिला था तब भी मेरा बाहरी संसार में ज्यादा फैलाव नहीं था। मैं जब भी अभ्यास में अपनी आँखें बंद करता मुझे अंदर बहुत सुंदर चीज़ें दिखती। अगर कोई थोड़ा सा भी अंदर जाए और अंदर की झलक देख ले! वह बाहरी फिल्में देखने ही नहीं जाएगा। अंदर की चीज़ें बहुत खूबसूरत हैं। मुझे अंदर बहुत सुंदर अनुभव हो रहे थे। मैं नहीं जानता था कि मुझे किस तरफ जाना है?

जब कोई फौज में भर्ती होता है तो वहाँ जो लोग पहले से होते हैं वे अपने जैसे विचार वालों की तादाद बढ़ाना चाहते हैं। माँस खाने वाले माँस की तारीफ करते हैं। शराब पीने वाले शराब की तारीफ करते हैं, लेकिन मजबूत इरादे वाले के साथ कोई मांस, शराब की जबरदस्ती नहीं करता। मेरा जाति तजुर्बा हैः

जहाँ चाह वहाँ राह।

***

धन्य अजायब

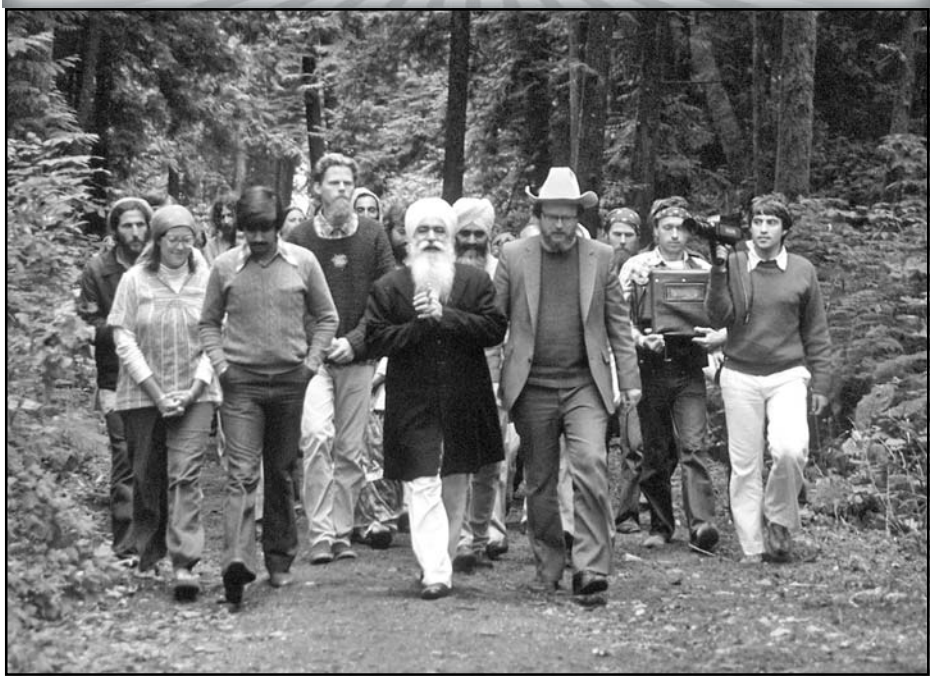

16 पी.एस. रायसिंह नगर (राजस्थान) आश्रम में सतसंगों के कार्यक्रमः

03 से 05 नवम्बर 2017

01 से 03 दिसम्बर 2017

02 से 06 फरवरी 2018

पत्रिका प्राप्त करने का स्थान:

अजायब बानी

आर.एस.जी – 01, वी.आई. पी. कालोनी,

रिद्धि सिद्धि इन्कलेव Ist

श्री गंगानगर – 335 001 (राजस्थान)

99 50 55 66 71 व 80 79 08 46 01

मुम्बई में सतसंग का कार्यक्रम :

3 जनवरी से 7 जनवरी 2018,

भूरा भाई आरोग्य भवन,

शान्तिलाल मोदी मार्ग (नजदीक मयूर सिनेमा),

कांदिवली (पश्चिम) मुम्बई – 400 067

98 33 00 40 00, व 022–24 96 50 00